

चिड़िया और बन्दर

एक जंगल में एक पेड़ पर गौरैया का घोंसला था। एक दिन कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। ठंड से कांपते हुए तीन चार बंदरो ने उसी पेड़ के नीचे आश्रय लिया। एक बंदर बोला “कहीं से आग तापने को मिले तो ठंड दूर हो सकती हैं।”

दूसरे बंदर ने सुझाया “देखो, यहां कितनी सूखी पत्तियां गिरी पड़ी हैं। इन्हें इकट्ठा कर हम ढेर लगाते हैं और फिर उसे सुलगाने का उपाय सोचते हैं।”

बंदरों ने सूखी पत्तियों का ढेर बनाया और फिर गोल दायरे में बैठकर सोचने लगे कि ढेर को कैसे सुलगाया जाए। तभी एक बंदर की नजर दूर हवा में उड़ते एक जुगनू पर पड़ी और वह उछल पड़ा। उधर ही दौड़ता हुआ चिल्लाने लगा “देखो, हवा में चिंगारी उड़ रही हैं। इसे पकड़कर ढेर के नीचे रखकर फूंक मारने से आग सुलग जाएगी।”

“हां हां!” कहते हुए बाकी बंदर भी उधर दौड़ने लगे। पेड़ पर अपने घोंसले में बैठी गौरैया यह सब देख रही थी। उससे चुप नहीं रहा गया। वह बोली “ बंदर भाइयो, यह चिंगारी नहीं हैं यह तो जुगनू हैं।”

एक बंदर क्रोध से गौरैया की देखकर गुर्गाया “मूर्ख चिड़िया, चुपचाप घोंसले में दुबकी रह।हमें सिखाने चली है।”

इस बीच एक बंदर उछलकर जुगनू को अपनी हथेलियों के बीच कटोरा बनाकर कैद करने में सफल हो गया। जुगनू को ढेर के नीचे रख दिया गया और सारे बंदर लगे चारों ओर से ढेर में फूंक मारने।

गौरैया ने सलाह दी “भाइयो! आप लोग गलती कर रहे हैं। जुगनू से आग नहीं सुलगेगी। दो पत्थरों को टकराकर उससे चिंगारी पैदा करके आग सुलगाइए।” बंदरों ने गौरैया को घूरा। आग नहीं सुलगी तो गौरैया फिर बोल उठी “भाइयो! आप मेरी सलाह मानिए, कम से कम दो सूखी लकड़ियों को आपस में रगड़कर देखिए।”

सारे बंदर आग न सुलगा पाने के कारण खीजे हुए थे। एक बंदर क्रोध से भरकर आगे बढ़ा और उसने गौरैया पकड़कर जोर से पेड़ के तने पर मारा। गौरैया फड़फड़ाती हुई नीचे गिरी और मर गई।

सीख : १. बिना मांगे किसी को भी सलाह नहीं देनी चाहिए, खासकर मूर्ख व्यक्ति को तो बिलकुल भी नहीं।

२. मूर्खों को सीख या सलाह देने का कोई लाभ नहीं होता। उल्टे सीख देने वाले को ही पछताना पड़ता है।

गिरिया और मुर

एक एंगल में एक पेरु पर गोरैया का झंभला था। एक दिन कड़ीके की ठंड पड़ रही थी। ठंड में कंपते हुए तीन गंदरों ने उभी पेरु के नीचे मुग्घ लिखा। एक गंदर नेला “कहीं में मुग उपने के भिले उठे ठंड दूर के भकड़ी है।”

दुसरे गंदर ने भुगथा “दोपे, यहां कितनी भापी पड़ियां गिरी पड़ी है। उचै, उकठ कर रुभ दूर लगाउ है। और फिर उमें भुलगावे का उपाय भेठउ है।”

गंदरों ने भापी पड़ियें का दूर भुगथा और फिर गेल दाघरे में ठंकर भेठने लगे कि दूर के कैमे भुलगाथा सग। उसी एक गंदर की नएर दूर रुवा में उठते एक एंगल पर पड़ी और वरु उकल पडा। उपर की टोडउ रुमु गिल्लावे लगा “दोपे, रुवा में गिगारी उठ रही है। उमें पकरुकर दूर के नीचे रापकर टुक भारने में मुग भुलग सारगी।”

“हां हां!” करुते हुए गकी गंदर ही उपर टोडने लगे। पेरु पर मुपने झंभले में गैदी गोरैया वरु भुग दोप रही थी। उभमें मुप नहीं रुका गया। वरु गैली” गंदर हाउथे, वरु गिगारी नहीं है वरु उठे एंगल है।”

एक गंदर नेण में गोरैया की दोपकर गुराथा “भुज गिरिया, मुपगाप झंभले में दूर की रकारुमें भिपावे गली है।”

उभ गीण एक गंदर उकलकर एंगल के मुपनी रुबेलियें के गीण कएरा भुगकर कैद करने में भदल के गया। एंगल के दूर के नीचे राप दिया गया और भारे गंदर लगे गारें। उमें दूर में टुक भारने।

गोरैया ने भलारु दी “हाउथे! मुप लेग गलडी कर रके है। एंगल में मुग नहीं भुलगेगी। ऐ पडुरें के एकराकर उभमें गिगारी पैदा करके मुग भुलगाउग।”

गंदरों ने गोरैया के भुग। मुग नहीं भुलगी उे गोरैया फिर गेल उठी “हाउथे! मुप भेरी भलारु भानिए, रुभ में रुभ ऐ भापी लकियियें के मुपम में रगठकर दीपग।”

भारे गंदर मुग न भुलगा पावे के कारु। पीले हुए थे। एक गंदर नेण में रुकर मुगे गडा। और उभने गोरैया पकरुकर एंग में पेरु के उने पर भारग। गोरैया दुरुदराडी करे नीचे गिरी और भर गरे।

भीप : ०. गिन भंगे किमी के ही भलारु नहीं ऐनी गानिए, पामकर भुज वृक्ति के उे गिलकुल ही नहीं।

३. भुज के भीप या भलारु ऐने का करे लारु नहीं देउ। उले भीप ऐने वाले के ही पकडना पडउ है।